आरती श्री वैष्णो देवी (त्रिकूट मंदिर) जी की

हे मात मेरी, हे मात मेरी,
कैसी यह देर लगाई हे दुर्गे । हे...
भवसागर में गिरा पड़ा हूं,
काम आदि ग्रह से घिरा पड़ा हूं ।
मोह आदि जाल में जकड़ा पड़ा हूं । हे...
न मुझमें बल है न मुझमें विद्या,
न मुझमें भक्ति न मुझमें शक्ति ।
शरण तुम्हारी गिरा पड़ा हूं । हे...
न कोई मेरा कुटुम्ब साथी,
न ही मेरा शरीर साथी ।
आपही उबारो पकड़ के बांहीं । हे...
चरण कमल की नौका बनाकर,
मैं पार हुंगा खुशी मानकर ।
यमदूतों को मार भगाकर । हे...
सदा ही तेरे गुणों को गाऊं,
सदा ही तेरे स्वरूप को ध्याऊं ।
नित प्रति तेरे गुणों को गाऊं । हे...
न मैं किसी का न कोई मेरा,
छाया है चारों तरफ अन्धेरा ।
पकड़ के ज्योति दिखा दो रास्ता । हे...
शरण पड़े हैं हम तुम्हारी,
करो यह नैया पार हमारी ।
कैसी यह देर लगाई है दुर्गे । हे...

विवरण

हे माता मैं इस नश्वर संसार में गिरा हुआ पड़ा हूँ, काम, क्रोध, मद, लोभ सभी अवगुणों से भरा पड़ा हूँ, मोह-माया के बँधनों में भी जकड़ा

हुआ हूँ, न मुझमें शक्ति है, न ज्ञान है और न हीं आपके चरणों के प्रति हमारा अनुराग ही है ।

हे माँ ! तुम इतनी देर क्यों लगा रही हो, मैं तुम्हारे शरणों में गिरा पड़ा हूँ । मेरा न कोई परिवार है न कोई साथी ही है, यहाँ तक कि हमारा शरीर भी हमारा साथी नहीं हैं । मेरे हाथ पकड़कर तुम ही मेरे सहायक बन जाओं ।

अपने चरण कमलों का नाव बनाकर हमें पार लगा दो अर्थात् अपने चरणों के प्रति हमें भक्ति का आशीर्वाद दे दो, मुझे अत्यन्त खुशी की अनुभूति होगी, जिससे मैं यम के दूतों को मार भगाकर आजीवन आपके गुणों की गाथा को गाता रहूँगा तथा हमेशा आपके स्वरूप का ही ध्यान किया करूँगा । यहाँ पर कोई मेरा नहीं है और न ही मैं किसी का हूँ ।

चारों तरफ अँधेरा ही अँधेरा छाया हुआ है, सिर्फ मैं आपके ही गुणों को गाता रहता हूँ । आप मेरे अन्दर ज्ञान की ज्योति जला दो तथा हमें सुमार्ग का रास्ता दिखा दो । हम तुम्हारे शरणों में गिरे हुए पड़े हैं, हमारे जीवन को सफल बना दो, देर नहीं करो ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.